UGC Approved Research Journal

ISSN No. 0971-796 X

प्राकृत-विद्या

पागद-विज्जा

PRAKRIT-VIDYA

Pāgada-Vijjā

प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राच्य भारतीय भाषाओं की हिन्दी तक की विकास-यात्रा दर्शानेवाली समीक्षित त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

A quarterly reviewed research journal devoted to the development of Prakrit, Apabhramsha and Ancient Indian Languages upto Hindi Language

वीर निर्वाण संवत् 2550	जनवरी-मार्च 2024	वर्ष 37	अंक 1
Veer Nirvan Samvat 2550	January-March 2024	Year 37	Issue 1

आचार्य कुन्दकुन्द समाधि-संवत् 2026

सम्पादक-मण्डल

श्री पुनीत जैन
(नवभारत टाइम्स)

प्रो. (डॉ.) रमेश कुमार पाण्डेय
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय)

सम्पादक (मानद)

प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन
(श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

प्रबन्ध सम्पादक

श्री राजेन्द्र जैन (संघपति)

प्रकाशक
श्री अनिल कुमार जैन
महामन्त्री
श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट
18-बी, स्पेशल इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली-110067
फोन : (011) 46062191-92
ई-मेल: kundkundbharti@gmail.com

Publisher
SHRI ANIL KUMAR JAIN
Secretary
Shri Kundkund Bharti Trust
18-B, Special Institutional Area
New Delhi-110067
Phone: (011) 46062191-92
E-mail: kundkundbharti@gmail.com

इस प्रति का मूल्य—बीस रुपया

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
1.	मंगलाचरण : संयमसूत्र		3
2.	सम्पादकीय : जैनाचार का वैशिष्ट्य	प्रो. वीरसागर जैन	6
3.	भारत का भाग्य	आचार्य विद्यानन्द मुनिराज	12
4.	जैन योग की उत्पत्ति एवं विकास	आचार्य श्रुतसागर मुनिराज	14
5.	झारखण्ड : युगों-युगों से श्रमण जैन-संस्कृति का ऐतिहासिक केन्द्र	पद्मश्री प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन	20
6.	क्या जैन धर्म सनातन है?	प्रो. (डॉ.) अनेकान्त कुमार जैन	23
7.	शब्द-ब्रह्म से स्वास्थ्य-लाभ	प्रो. (डॉ.) प्रेमचन्द रांवका	31
8.	भाग्य और पुरुषार्थ में कर्म की भूमिका	डॉ. अनिल कुमार जैन	36
9.	व्यक्तित्व-विकास का आधार श्रावक का व्यवहार	डॉ. ज्योति बाबू जैन	43
10.	जैन धर्म के बारे में करुणानिधि के विचार	डॉ. दिलीप धींग	47
11.	प्राकृत-साहित्य में जाति-व्यवस्था	डॉ. वीरचन्द्र जैन	49
12.	दशवैकालिकसूत्र में वर्णित जैन संस्कृति	श्रीमती रीतु लोड़ा	54
13.	महाकवि रइधू कृत वैराग्य भावनाएँ	डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल	60
14.	रात्रिभोजनत्याग की वैज्ञानिकता	सारिका ओसवाल	65
15.	जैन श्रावक : एक आदर्श नागरिक	सौरभ कुमार जैन	69
16.	पाँच समवाय पूर्वक ही कार्य की सिद्धि	संभव जैन	75
17.	प्राकृत के अभिलेखों में नैतिक-मूल्य	डॉ. सुमत कुमार जैन	81
18.	वैशाली का वैभव	आचार्य चतुरसेन शास्त्री	89
19.	पुस्तक-समीक्षा	पं. अंकुर जैन शास्त्री	92
20.	समाचार-दर्शन		93

डॉ. राजाराम जैन को पद्मश्री अवार्ड घोषित

प्राकृत एवं जैन आगम के अध्येता विद्वान डॉ. राजाराम जैन को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार 2024 के लिए नामित किया गया है। इस खबर के आते ही सम्पूर्ण जैन समाज में हर्षोल्लास का वातावरण है। आप स्याद्वाद महाविद्यालय के पूर्व स्नातक और श्री गणेश वर्णी संस्थान, वाराणसी के अध्यक्ष, H.D. जैन कालेज, आरा (बिहार) के पूर्व प्राकृत-संस्कृत विभागाध्यक्ष, प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश साहित्य एवं जैन विद्या के अप्रतिम मनीषी हैं। हमें विशेष गर्व है कि आप कुन्दकुन्द भारती के निदेशक और 'प्राकृत-विद्या' के सम्पादक भी रहे हैं। ◆◆

क्या जैन धर्म सनातन है?

—प्रो. (डॉ.) अनेकान्त कुमार जैन*

सनातन धर्म कोई संप्रदाय नहीं हो सकता। उत्पत्तियाँ सम्प्रदायों की हो सकती हैं, धर्म की नहीं, इसलिए धर्म हमेशा सनातन ही होता है। इसलिए विभिन्न सम्प्रदायों के मध्य मुझे यह चर्चा ही व्यर्थ लगती है कि कौन-सा संप्रदाय सनातन है। यह समस्या ही इसलिए खड़ी हुई है कि हमने सम्प्रदायों के नाम धर्म रख दिए हैं, जैसे– हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म आदि। यदि आप वास्तव में सनातन धर्म की खोज में निकल पड़े हैं तो आपको बिना किसी आग्रह के इन तीनों सम्प्रदायों के मूल ग्रन्थों का गहराई से अध्ययन करना होगा और इन सम्प्रदायों के द्वारा पैदा की गई समस्त अवधारणाओं और क्रियाकांडों को कुछ पल के लिए उपेक्षित करके उसके अन्दर में स्थित मूल आध्यात्मिक उत्स का दर्शन करने का अभ्यास करना पड़ेगा। सम्प्रदायों द्वारा समय-समय पर जो अलग-अलग वस्त्र धर्मरूपी आत्मा के शरीर पर पहनाये गए हैं, उनका चीरहरण किये बिना आप उसके स्थूल शरीर का भी साक्षात्कार नहीं कर सकते, फिर उसमें विराजमान परमशुद्ध स्वरूप अखंड परमात्म तत्त्व आत्मास्वरूपी सत् चित् आनंद स्वरूपी सनातन वस्तुस्वभाव रूप धर्म का साक्षात्कार करने का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता।

जैन धर्म क्या है?

जैन धर्म भी एक धर्म है, कोई सम्प्रदाय नहीं है, किन्तु प्रत्येक संप्रदाय की तरह सांस्कृतिक, सामाजिक और पारंपरिक रीति-रिवाजों से आच्छादित जैन धर्म भी वर्तमान में एक संप्रदाय की तरह ही प्रचलन में है। उसके पूजा पाठ, मंदिर, मूर्ति, तीर्थ, पुरातत्त्व, पर्व, व्रत, उपवास, तपस्या और मोक्ष-साधना-पद्धति के अपने मौलिक स्वरूप हैं, जो उसे अन्य परम्पराओं से भिन्न करते हैं। अन्य परम्पराओं की तरह उनका अपना एक सुदीर्घ इतिहास है, संस्कृति है, आगम हैं, साहित्यिक

*आचार्य– जैनदर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110016 मोबाईल : 9711397716

सादर अर्पित

श्रद्धेय गुरुवर प्रो. अनेकान्त कुमार जैन जी

01/06/19

जैनदर्शनमीमांसा

(जैनदर्शनविभागीया शोधपत्रिका)

संरक्षकः
प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री
कुलपतिः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
नवदेहली

प्रधानसम्पादकः
आचार्यः प्रकाशपाण्डेयः
प्राचार्यः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
भोपालपरिसरः, भोपालम्

सम्पादकौ

श्री प्रतापः
अध्यक्षः, जैनदर्शनविभागः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
भोपालपरिसरः, भोपालम्

डॉ. पंकजकुमारजैनः
अ. सहायकाचार्यः, जैनदर्शनविभागः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
भोपालपरिसरः, भोपालम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
Accredited with 'A' Grade by NAAC
भोपालपरिसरः, संस्कृतमार्गः, बागसेवनिया
भोपालम् (म.प्र.) ४६२०४३

पृ. 28 से 35

प्रकाशकः

जैनदर्शनविभागः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
भोपालपरिसरः, संस्कृतमार्गः, बागसेवनिया
भोपालम्, (म. प्र.) - ४६२०४३
Email - jaindarshanvibhagbhopal@gmail.com
Website - www.rsksbhopal.ac.in

ISSN - प्रक्रियाधीन।

अङ्कः - चतुर्थः (२०१९)

मूल्यम् - २००/- रुप्यकाणि

अक्षरसंयोजनम् तकनीकीसहयोगश्च - रोहित पचौरी

मुद्रकः - **S.M. Systems,**
154, Mahendra Complex,
M.P. Nagar, Zone -1, Bhopal

प्राप्तिस्थलम् -

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
भोपालपरिसरः, संस्कृतमार्गः, बागसेवनिया,
भोपालम्, (म. प्र.) - ४६२०४३
दूरभाषसंख्या - ०७५५-२४१८०४३, फैक्ससंख्या - ०७५५-२४१८००३

जैनदर्शने कालद्रव्यम् : तुलनात्मकमध्ययनम्

आचार्यः डॉ. अनेकान्तकुमारजैनः
जैनदर्शनविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
(मा.विश्वविद्यालयः), नवदेहली- 110016
मो. 9711397716

जैनपरम्परायाम् भगवतः महावीरस्य पश्चात् आचार्य उमास्वामी तत्त्वार्थसूत्रे, आचार्यकुन्दकुन्दः स्वपंचास्तिकाये, समयसारे एवं प्रवचनसारग्रन्थे च तथा च आचार्यनेमिचन्द्रेण द्रव्यसंग्रहे द्रव्योपरि व्यापकदृष्ट्या चिन्तनं कृतम्।

द्रव्यस्य स्वरूपम्

द्रव्यपदार्थः, तत्त्वम् एवं सत् एतेषां शब्दानां विभिन्नैः सम्प्रदायैः प्रयोगः कृतः तथा च स्वचिंतनानुरूपं एषां व्याख्यानमपि कृतम्। जैनदर्शने एतेषां शब्दानां प्रयोगः तथा उपयोगः आगमयुगतः अद्यावधिपर्यन्तं प्रचलितः। आचार्य उमास्वामिना-तत्त्वार्थसूत्रे उक्तं - गुणपर्ययवद् द्रव्यम्। उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत्। सत् द्रव्यलक्षणम्।[1]

भगवान् महावीरः तथा उत्तरवर्तिनः जैनाचार्याः सम्पूर्णलोकं षड्द्रव्यात्मकं इति कथितवन्तः, एतदर्थं आचार्येभ्यः तथा अन्यग्रन्थेभ्यः द्रव्यम्, तत्त्वम्, पदार्थ एवं सत् एतेषां चतुर्णां शब्दानां प्रयोगः उपलब्धोऽस्ति, वस्तुतः चत्वारः शब्दाः एकार्थवाचकाः सन्ति, यत्र द्रव्यशब्दस्य प्रयोगः कृतः तत्र तस्मात् पूर्वं संख्या-वाचकः षड्शब्दस्य प्रयोगः कृतः।

द्रव्यं द्विविधम्

द्रव्यं मुख्यरुपेण द्विविधं- जीवः अजीवश्च। जीवस्यापि द्वौ भेदौ भवतः - त्रसः तथा स्थावरः। त्रसनामकस्य उदयेन जीवः त्रसः जीवः तथा स्थावरनामकस्य उदयेन स्थावरः जीवः कथ्यते। त्रसस्थावरयोः भेदयोः संसारी संसारि जीवानां समग्रभावेन समावेषः भवति। संसारी जीवः एतयोः द्वयोः भेदयोः बहिः न सन्ति। द्वीन्द्रियजीवादारभ्य अयोगकेवली पर्यन्तं सर्वे जीवाः त्रसजीवाः सन्ति। त्रसाः श्रेष्ठाः सन्ति। यतः एषां सर्वेषाम् उपयोगानां सद्भावः

पर्षदा

षाण्मासिक शोध पत्रिका

प्रवेशाङ्क

संवत् २०७७, चैत्र-भाद्रपद, अप्रैल-सितम्बर २०२०, वर्ष १, अङ्क १

सम्पादक

गयाचरण त्रिपाठी

जितेन्द्र बी. शाह

भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी

दिल्ली

पर्षदा

भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के व्यापक आयाम के अन्तर्गत
नैर्ग्रन्थिक चिन्तनधारा का विवेचन एवं विश्लेषण करने वाली
षाण्मासिक शोधपत्रिका

•

सम्पादक

डॉ. गयाचरण त्रिपाठी, *संस्था निदेशक*

डॉ. जितेन्द्र बी. शाह, *संस्था उपाध्यक्ष*

•

सहायक सम्पादक

वाचस्पति पाण्डेय

•

लेज़र सेटिंग्स

लक्ष्मी कान्त

•

वार्षिक मूल्य – रु. ३००/-
प्रति अंक मूल्य – रु. १७५/-
प्रवेशांक मूल्य – रु. २००/-

•

मुद्रक

सीमा प्रिन्टर्स (बवाना, दिल्ली) मो. ८७००३१६४५१

•

भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी

विजय वल्लभ स्मारक, जैन मन्दिर, जी. टी. करनाल रोड,
पोस्ट – अलीपुर, दिल्ली – ११००३६

दूरभाष : ०११-२७२०२०६५, २७२०६६३०

blinstitute.org • info@blinstitute.org • blinstitute1984@gmail.com

पत्रिका में छपे सभी लेख विद्वान् लेखकों के अपने विचार हैं, सम्पादकों की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है।

10. ऋषिभाषित में प्रतिपादित अध्यात्म पथ
– डॉ. श्वेता जैन 107

11. Violence as a detrimental factor to our own self
– *Prof. Anekant Kumar Jain* 115

12. Rôle and Function of Prakrit in the Sanskrit Drama
– *Prof. G. C. Tripathi* 123

13. A Few Modern Interpretations of Non-absolutism
– *Prof. Dr. D.N. Bhargava* 141

संस्थानगत शैक्षणिक गतिविधियाँ 149

◆ ◆ ◆

पर्णिका
बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी

Violence as a Detrimental Factor to Our Own Self

PROF. ANEKANT KUMAR JAIN, DELHI

The philosophy of non-violence is a living practice. More than refraining from violence; it is a deep reverence for all life. It starts by cultivating a genuine respect for one's own self; one's consciousness or life force, and for each of its supportive elements: the body, mind and emotions. We come to realize that our life force is precious and that we are here to respect the innate consciousness. It is a process of taking care of both our inner being and the material frame in which it dwells. Like a mother nurturing her child, we do what is helpful for our spiritual growth. The Jaina Ācārya Samantabhadra (4th A.D.) announces that in this world only those who are committed to ahiṃsā, realise the universal soul:

अहिंसाभूतानां जगति विदितं ब्रह्म परमम्।

Many of us might be conversant with the famous Jain emblem, which contains at its base the following motto:

परस्परोपग्रहो जीवानाम्।

This is an important aphorism from the first Sanskrit text of the Jain tradition called *Tattvārthsūtra* by Ācārya Umāsvāmī. It means that 'living beings (jīvas) are mutually dependent upon each other.' The industrialist pays wages to the labourer and the latter acts in a manner likely to benefit the former and to safeguard his interests. Life's formula is not conflict, for conflict denotes helplessness and is not an independent trait. On the other hand, mutual beneficence is an independent trait, while treating life as conflict compels man to take the course of violence. Mutual beneficence takes a person on the road to non-violence.

श्रमण

ŚRAMAṆA

(Since 1949)

A Quarterly Refereed Research Journal of Jainology

Vol. LXXIII No. I January-March, 2021

Special Issue on Late Prof. Sagarmal Jain

Editor

Dr. Shriprakash Pandey

Associate Editors

Dr. Om Prakash Singh **Dr. Sanjay Kumar Singh**

Parshwanath Vidyapeeth, Varanasi

(Established: 1937)

(Recognized by B. H. U.as an External Research Centre)

Address:

I T I Road, P.O., B. H. U , Varanasi 221005

Email: pvpvaranasi@gmail.com

Website: www.pv-edu.org

Phone: 0542-2575890

Mob: 9936179817

ADVISORY BOARD

Dr. Shugan C. Jain
New Delhi
Prof. Cromwell Crawford
Univ. of Hawaii
Prof. Anne Vallely
Univ. of Ottawa, Canada
Prof. Peter Flugel
SOAS, London
Prof. Christopher Key Chapple
Univ. of Loyola, USA

Prof. Ramjee Singh
Bheekhampur, Bhagalpur
Prof. Sagarmal Jain
Prachya Vidyapeeth, Shajapur
Prof. K.C. Sogani
Chittaranjan Marg, Jaipur
Prof. D.N. Bhargava
Bani Park, Jaipur
Prof. Prakash C. Jain
JNU, Delhi

EDITORIAL BOARD

Prof. M.N.P. Tiwari
B.H.U., Varanasi
Prof. K. K. Jain
B.H.U., Varanasi
Dr. A.P. Singh, Ballia

Prof. Gary L. Francione
New York, USA
Prof. Viney Jain, Gurgaon
Dr. Rahul K. Singh
Pratapgarh

ISSN: 0972-1002

SUBSCRIPTION

Annual Membership

For Institutions : Rs. 500.00, $ 50
For Individuals : Rs. 300.00, $ 30

Life Membership

For Institutions : Rs. 5000.00, $ 250
For Individuals : Rs. 2000.00, $ 150

Per Issue Price : Rs. 150.00, $ 15

Membership fee & articles can be sent in favour of
Parshwanath Vidyapeeth, I.T.I. Road, Karaundi, Varanasi-5

PUBLISHED BY

Shri Indrabhooti Barar, for Parshwanath Vidyapeeth, I. T. I. Road, Karaundi, Varanasi 221005, Ph. 0542-2575890

Email: pvpvaranasi@gmail.com

Theme of the Cover:

Photograph of Prof. Sagarmal Jain

NOTE: The facts and views expressed in the Journal are those of authors only. (पत्रिका में प्रकाशित तथ्य और विचार लेखक के अपने हैं।)

Printed by- The Mahavir Press, Bhelupur, Varanasi

24. श्रमण नहीं पर श्रमण जैसे 81-83
डॉ. सुभाष कोठारी
25. सहज किन्तु असाधारण प्रतिभा सम्पन्न
डॉ. सागरमलजी जैन 84-86
डॉ. उमेश चन्द्र सिंह
26. सरस्वती माँ के वरदपुत्र 87-90
डॉ. प्रतिभा जैन
27. दर्शन एवं जैनागम के गूढ़वेत्ता थे प्रो. सागरमल जी 91-93
प्रो. अनेकान्त कुमार जैन
28. प्राच्यविद्या के उपासक प्रो. सागरमल जी 94-95
डॉ. सुमत कुमार जैन
29. अद्वितीय मनीषी : डॉ. सागरमल जी 96-97
डॉ. आनंद कुमार जैन
30. प्रो. सागरमल जैन का जैन साहित्य
के विकास में योगदान 98-101
डॉ. आशीष कुमार जैन
31. डॉ. सागरमलजी को श्रद्धा–सुमन 102
श्री शांतिलाल कोठारी
32. Prof. Sagarmal Ji Jain 103-104
Sh. Ravinder Jain
33. खुजराहो की कला और जैनाचार्यों की
समन्वयात्मक एवं सहिष्णु दृष्टि 105-111
डॉ.सागरमल जैन
34. जैन विद्या के क्षेत्र में शोध एवं अध्ययन
का वर्तमान परिदृश्य 112-122
डॉ. सागरमल जैन
विद्यापीठ के प्रांगण में 123-125
जैन जगत् 126

दर्शन एवं जैनागम के गूढ़वेत्ता थे प्रो. सागरमल जी

- प्रो. अनेकान्त कुमार जैन

दिनांक २ दिसंबर २०२० को दर्शन एवं जैनागम के गूढ़वेत्ता ८८ वर्षीय प्रो. सागरमल जैन जी ने संथारा पूर्वक लोकोत्तर प्रयाण कर लिया। इनके साथ इस लोक से जैन आगमों विशेषकर अर्धमागधी आगमों के एक कर्मठ और गूढ़ दार्शनिक वरिष्ठ मनीषी का एक विशाल युग समाप्त हो गया।

मुझे उनका सान्निध्य बाल्यकाल से ही प्राप्त रहा जब वे बनारस में पार्श्वनाथ विद्याश्रम के निदेशक के रूप में थे। मुझे उनकी गोदी में खेलने का सौभाग्य प्राप्त है। १९८० से आज तक जब से मैंने उन्हें देखा, जाना उनका एक सा व्यक्तित्व मेरे दिलो दिमाग में बसा रहा। आकर्षक व्यक्तित्व, मुस्कुराता चेहरा, गौर वर्ण, श्वेत कुर्ता पैजामा और पैरों में हवाई चप्पल। मैंने आज तक इसके अलावा उन्हें किन्हीं अन्य परिधान में देखा ही नहीं।

मेरे पिताजी (प्रो. फूलचंद जैन जी) तथा मां (डॉ. मुन्नीपुष्पा जैन) से अत्यधिक वात्सल्य भाव होने से वे अक्सर अपनी धर्मपत्नी के साथ बनारस में रवीन्द्रपुरी स्थित हमारे आवास पर आते थे और पिताजी के साथ घंटों दार्शनिक चर्चाएं करते थे। उनके पास एक अलग रंग का प्राइवेट रिक्शा था जिस पर वे आते थे। उन दिनों व्यक्तिगत रिक्शा और रिक्शेवाला होना बहुत बड़ी बात थी।

उन्होंने मुझे जीवन भर प्रेरणा, मार्गदर्शन और आशीर्वाद दिया। साक्षात् उनसे प्राकृत आगमों को पढ़ने का भी मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। सन २०१४ में जब मैंने प्राकृत भाषा की प्रथम पत्रिका 'पागद-भासा' प्रकाशित की तो उसे पढ़कर वे बहुत खुश हुए और इसी तरह आगे भी करते रहने को प्रोत्साहित किया ।

वे स्थानकवासी श्वेताम्बर जैन समाज के लिए भीष्मपितामह की तरह रहे और सैकड़ों साधु-साध्वियों को आगमों का अध्यापन, शोध आदि कार्य अंत समय तक करवाते रहे। आप भारतीय दर्शन के सिद्धहस्त मनीषी थे। तुलनात्मक दर्शन में आपने जैन बौद्ध और गीता पर जो अनुसंधान किया वह बहुत प्रसिद्ध हुआ। आप सुप्रसिद्ध दार्शनिक, इतिहासकार, प्रशासक, लेखक, संपादक, वक्ता तथा प्राकृत भाषा के मर्मज्ञ थे।

मेरे पिताजी ने मूलाचार पर शोध कार्य किया था। यह दिगम्बर परंपरा का मूल ग्रंथ है। प्रो. सागरमल जी ने इस शोध ग्रंथ को बिना किसी भेदभाव के पार्श्वनाथ

I.S.S.N. - 0971 - 9024 R.N.I. No. 50199/88

अर्हत् वचन
ARHAT VACANA

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा मान्यता प्राप्त शोध संस्थान),
इन्दौर द्वारा प्रकाशित शोध त्रैमासिकी

Peer reviewed Quarterly Research Journal of
Kundakunda Jñānapīṭha, Indore
(An Institute Recognised by Devi Ahilya University, Indore)

वर्ष 34, अंक 1 जनवरी-मार्च 2022
Volume 34, Issue 1 January-March 2022

मानद सम्पादक
डॉ. अनुपम जैन
आचार्य - गणित एवं मानद निदेशक
प्राचीन भारतीय गणित अध्ययन केन्द्र
डाटा विज्ञान एवं पूर्वानुमान अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर - 452 017
094250 53822

Hony. Editor
Dr. Anupam Jain
Professor of Mathematics & Director
Centre for Study of Ancient Indian Mathematics
School of Data Science and Forecasting
Devi Ahilya University
Indore - 452 017
094250 53822

Email : anupamjain3@rediffmail.com

प्रकाशक
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ
584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज,
इन्दौर 452 001 (म.प्र.)
0731-2545421

PUBLISHER
Kundakunda Jñānapīṭha
584, M. G. Road, Tukoganj,
INDORE - 452 001 (M.P.) INDIA
0731-2545421

Website : www.kundkundgyanpeeth.org

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर से प्रकाशित एवं
सुगन ग्राफिक्स, एल.जी.-11, ट्रेड सेन्टर, साऊथ तुकोगंज, इंदौर से मुद्रित, फोन : 0731-4065518

अनुक्रम / INDEX

सम्पादकीय / Editorial

सामयिक सन्दर्भ — 03
❑ अनुपम जैन, इन्दौर

लेख / ARTICLES

सिरिभूवलय का रचनाकाल — 09
❑ कुसुम पटोरिया, नागपुर

तमिल साहित्य के संवर्द्धन में जैनों का योगदान : एक विहंगावलोकन — 17
❑ दिलीप धींग, चेन्नई

जैन कर्म सिद्धान्त : वर्तमान सन्दर्भ में — 27
❑ अनिल कुमार जैन, जयपुर

मूलाचार में आयुर्वेद सम्बन्धी विषय — 35
❑ आचार्य राजकुमार जैन, इटारसी

स्वस्तिक को तो सबों ने सहेजा किन्तु प्राणवाय को क्यों भुलाया? — 47
❑ स्नेहरानी जैन, सागर

अयोध्या, इच्छवाकु और आदि तीर्थंकर ऋषभदेव — 57
❑ शैलेन्द्र कुमार जैन, लखनऊ

The Rich Heritage of Jaina Yoga — 67
❑ Anekant Kumar Jain, New Delhi

Application of Jaina Principles in Economics — 73
❑ K. K. Naulakha, Mumbai

Zero in Jaina Literature — 85
❑ Anupam Jain, Indore

समीक्षा / Review

अप्रतिम प्रतिभा सिन्धु 'सिरिभूवलय' रचयिता आचार्य कुमुदेन्दु द्वारा इंजी. अनिल कुमार जैन — 88
❑ अनुपम जैन, इन्दौर

टिप्पणी / Notes

अहिंसक समाज की स्थापना में लघु मध्यम और कुटीर उद्योगों की भूमिका - एक विमर्श — 89
❑ साधना कुमारी एवं एस. बी. सिंह, भोपाल

श्रमण संस्कृति को संघीय विचार धारा से आसन्न खतरे — 91
❑ चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता

Peace-ful, Constructive and logical promotion of Vegetarianism — 93
❑ Shailendra Ghia, Mumbai

आख्या / Report

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ एवं ज्ञानोदय पुरस्कार-2021 समर्पण समारोह, इन्दौर, 27 मार्च 2022 — 95
❑ सुरेखा मिश्रा, इन्दौर

मत-अभिमत — 99

ARHAT VACANA
Kundakunda Jñānapītha, Indore
ISSN 0971-9024

Vol. 34, No. 1, January-March 2022, 67-72

The Rich Heritage of Jaina Yoga

■ Anekant Kumar Jain*

Abstract

There is a rich and prolong tradition of Yoga in India. Many texts have been written by different Jaina scholars in ancient time and it continues in later centuries too. In the 20-21 centuries Ācārya Tulsi, Ācārya Mahāprajña Muni Praṇāṃasāgar, Muni Praṇamya Sagara and Gaṇinī Āryikā Jñānamatī and Āryikā Canadanāmati Mātājī also contributed in this field by one or other way.

Yoga has a long history. It is an integral subjective science. The origins of yoga are a matter of debate[1] There is no consensus on its chronology or specific origin other than that yoga developed in ancient India. Suggested origins are the Indus Vally Civilization (3300-1900 BCE)[2] and pre-Vedic Eastern states of India[3] the Vedic period (1500-500 BCE), and the śramaṇa movement.[4] According to Gavin Flood, continuities may exist between those various traditions, This dichotomization is too simplistic, for continuities can undoubtedly be found between renunciation and Vedic Brāhmanism, while elements form non-Brahmanical, Śramaṇa traditions also played an important part in the formation of the renunciate ideal.[5]

The very earliest indication of the existence of some form of Yoga practices in India comes from the Harappan culture which can be dated at least as far back as 3000 B.C. A number of excavated seals show a figure seated in a Yoga position that has been used by the Indian Yogis for meditation till the present day. One of the depicted figures goes a long way towards certifying the pre-Āryan, pre-Vedic inroads of Jainism across Asia. Professor A Chakravarti has suggested that the Harappā and Mohenjodāro figures of the Yogī and the bull indicate a connection with the very first Tīrthaṃkara, Ṛṣabha, and a "cult of ahiṃsā" which has the faith of those residents of the early Indus-Valley."[6] It has been theorised that the images from Mohenjodāro of the naked yogis reflect a pattern that would be repeated later on in Jain sculpture.[7]

Richard lannay writes[8]- "Another familial motif is that of a nude main represented as a repeat motif in rigidly upright posture, his legs slighty apart, arms held parallel with the sides of his body, which recurs later as the Jain Tīrthaṃkara,

* Deptt. of Jain Philosophy, Faculty of Philosophy, Shri Lalbahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi-110016, Mob.: +91 9711397716, Email : drakjain2016@gmail.com

I.S.S.N. - 0971 - 9024 R.N.I. No. 50199/88

अर्हत् वचन
ARHAT VACANA

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा मान्यता प्राप्त शोध संस्थान),
इन्दौर द्वारा प्रकाशित शोध त्रैमासिकी

Peer reviewed Quarterly Research Journal of
Kundakunda Jñānapīṭha, Indore
(An Institute Recognised by Devi Ahilya University, Indore)

वर्ष 33, अंक 2-3-4 संयुक्तांक अप्रैल-दिसम्बर 2021
Volume 33, Issue 2-3-4 April-December 2021

मानद सम्पादक
डॉ. अनुपम जैन
आचार्य - गणित
डाटा विज्ञान एवं पूर्वानुमान अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर - 452 001
094250 53822

Hony. Editor
Dr. Anupam Jain
Professor of Mathematics
School of Data Science and Forecasting
Devi Ahilya University
Indore - 452 001
094250 53822

Email : anupamjain3@rediffmail.com

प्रकाशक
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ
584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज,
इन्दौर 452 001 (म.प्र.)
0731-2545421

PUBLISHER
Kundakunda Jñānapīṭha
584, M. G. Road, Tukoganj,
INDORE - 452 001 (M.P.) INDIA
0731-2545421

28 फरवरी 2022 को प्रकाशित

Website : www.kundkundgyanpeeth.org

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर से प्रकाशित एवं
सुगन ग्राफिक्स, एल.जी.-11, ट्रेड सेन्टर, साऊथ तुकोगंज, इंदौर से मुद्रित, फोन : 0731-4065518

RNI No.: 50199/88 I.S.S.N. 0971 - 9024

वर्ष : 33, अंक : 2-4, अप्रैल-दिसम्बर 2021

अनुक्रम / INDEX

परिवर्तन का स्वागत है 03
❑ सूरजमल बोबरा, इन्दौर

लेख / ARTICLES

कुतुबमीनार : मानस्तम्भ या सुमेरु पर्वत 05
❑ अनेकान्तकुमार जैन, नईदिल्ली

जैन आदिपुराण के संदर्भ में सिंधु सभ्यता की रहस्यमयी मुद्राओं की व्याख्या 15
❑ कैलाशचन्द्र जैन (इंजी.), इन्दौर

आचार्य समन्तभद्र स्वामी का आयुर्वेद विषयक कर्तृत्व 31
❑ राजकुमार जैन (आचार्य), इटारसी

श्रावक-चर्या और विज्ञान 39
❑ लक्ष्मीचन्द्र जैन, जबलपुर

नीतिशास्त्र विषयक संस्कृत जैन साहित्य और इसकी दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ 45
❑ अनिल कुमार जैन (ब्र.), सांगानेर (जयपुर)

जैन धर्म एवं साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान 53
❑ सविता जैन, दमोह

Goricho Jaina Mandir in Pakistan built in 300 A.D. 59
❑ Rajmal Jain, Ahmedabad

Reflection on our picture of STCT 67
❑ Shashibhushan Rath, Bhubaneshvar

Non-Violence Vs Non Existence 75
❑ Vidhi Jain, Bhopal / Indore

टिप्पणी / Notes

ऋषभपुत्र भरत से ही देश का नाम भारत 81
❑ अनुपम जैन, इन्दौर

समीक्षा / Review

श्रेष्ठ पठनीय एवं संग्रहणीय कृति, 'जैन दर्शन : विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में' द्वारा अनिल कुमार जैन, जयपुर 83
❑ अनुपम जैन, इन्दौर

एक संग्रहणीय कृति - 'अजित स्मृति', सम्पादक - अनुपम जैन एवं अनिका जैन, इन्दौर 87
❑ श्रेणिक बंडी, इन्दौर

गतिविधियाँ

डॉ. अनुपम जैन अभिनन्दन समारोह, दिल्ली, 05.09.2021 / इन्दौर, 02.10.2021 89
❑ विजय कुमार जैन, हस्तिनापुर

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की स्मृति में वेबिनार, 15.11.21 93
❑ संजीव सोगानी, दिल्ली

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा 4 ज्ञानवर्द्धक योजनाओं का शुभारम्भ, 19.11.21 94
❑ अरविन्द कुमार जैन, इन्दौर

जैन संस्कृति एवं संस्कार, राष्ट्रीय संगोष्ठी, इन्दौर, 24-26 दिसम्बर 2021 95
❑ सुरेखा मिश्रा, इन्दौर

मत-अभिमत 97

Sugan Graphics, Indore / 930 212 55 94

वर्ष-33, अंक-2-4, अप्रैल-दिसम्बर 2021, 5-14

अर्हत् वचन
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर
ISSN 0971-9024

कुतुबमीनार : मानस्तम्भ या सुमेरु पर्वत?

■ अनेकान्त कुमार जैन*

सारांश

कुतुबमीनार अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त दिल्ली का पुरातत्त्वीय स्मारक है इसको कुतुबुद्दीन ऐबक (1191-92 ई.) ने इस अंचल के 27 मन्दिरों को तोड़कर बनवाया था। हरियाणा वासी जैन कवि बुधश्रीधर के पासणाह चरित्र के उल्लेखों एवं इस स्मारक में लगी मूर्तियों, समीपवर्ती पुरा स्मारकों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि इसका निर्माण जैन मंदिरों को ध्वस्त कर किया गया है एवं यह स्वयं सुमेरु पर्वत था।

हमें ईमानदारी पूर्वक भारत के सही इतिहास की खोज करनी है तो हमें जैन आचार्यों द्वारा रचित प्राचीन साहित्य और उनकी प्रशस्तियों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। यह बात अलग है कि उनके प्राचीन साहित्य को स्वयं भारतीय इतिहासकारों ने उतना अधिक उपयोग इसलिए भी नहीं किया क्योंकि जैन आचार्यों द्वारा रचित साहित्य के उद्धार को मात्र अत्यन्त अल्पसंख्यक जैन समाज और ऊँगली पर गिनने योग्य संख्या के जैन विद्वानों की जिम्मेदारी समझा गया और इस विषय में राजकीय प्रयास बहुत कम हुए। इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि कुछ साम्प्रदायिक भेदभाव का शिकार भी जैन साहित्य हुआ है और यही कारण है कि आज भी जैन आचार्यों के द्वारा संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश आदि विविध भारतीय भाषाओं में प्रणीत हजारों-लाखों हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ शास्त्र भंडारों में अपने सम्पादन और अनुवाद आदि की प्रतीक्षा में रखी हुई है।

प्राचीन काल से आज तक जैन संत बिना किसी वाहन का प्रयोग करते हुए पदयात्रा से ही पूरे देश में अहिंसा और मैत्री का सन्देश प्रसारित करते आ रहे हैं। दर्शन, कला, ज्ञान-विज्ञान और साहित्य रचना में उनकी प्रगाढ़ रूचि रही है। अपने लेखन में उन्होंने हमेशा वर्तमान कालीन देशकाल, परिस्थिति, प्रकृति सौंदर्य, तीर्थयात्रा, राज व्यवस्था आदि का वर्णन किया है। उनके ग्रंथों की प्रशस्तियाँ, गुर्वावलियाँ आदि भारतीय इतिहास को नयी दृष्टि प्रदान करते हैं। यदि इतिहासकार डॉ. ज्योति प्रसाद जैन जी की कृति **'भारतीय इतिहास : एक दृष्टि'** पढ़ेंगे तो उन्हें नया अनुसंध्येय तो प्राप्त होगा ही साथ ही एक नया अवसर इस बात का भी मिलेगा कि इस दृष्टि से भी इतिहास को देखा जा सकता है। जैन साहित्य में इतिहास की खोज करने वाले 95 वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान् प्रो. राजाराम जैन जी जिन्होंने अपना पूरा जीवन प्राकृत और अपभ्रंश की पाण्डुलिपियों के सम्पादन में लगा दिया, यदि उनकी भूमिकाओं और निबंधों को पढ़ेंगे तो आँखें खुल जाएंगी और लगेगा कि आधुनिक युग में भौतिक विकास के उजाले के मध्य भी भारत के वास्तविक इतिहास की अज्ञानता का कितना सघन अन्धकार है।

मुझे लगता है कि उन्होंने यदि 12-13 वीं शती के जैन संतकवि बुधश्रीधर द्वारा अपभ्रंश भाषा में रचित जैन धर्म के तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन पर आधारित रचित ग्रन्थ **'पासणाह चरिउ'** की पाण्डुलिपि का सम्पादन और अनुवाद न किया होता तो दिल्ली और कुतुबमीनार के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण जानकारी कभी न मिल पाती।

* आचार्य – जैन दर्शन विभाग, दर्शन संकाय, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नईदिल्ली-110016, मो.: 9711397716
Email : anekant76@gmail.com

10 सितम्बर 2021
जिनवाणी 52
ISSN 2249-2011

चिन्तन

पहले धर्म क्षेत्र में हो अणुव्रतों का पालन*

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं धर्मक्षेत्रे विनश्यति।
धर्मक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।।

अन्य क्षेत्र में किया हुआ पाप धर्म-क्षेत्र में आराधना करने पर सम्भवतः विनाश को प्राप्त हो भी सकता है, किन्तु धर्म-क्षेत्र में किया गया पाप वज्रलेप के समान हो जाता है जिसका नाश करना बहुत कठिन हो जाता है।

यह सुभाषित अर्थ सहित प्रत्येक मन्दिर, तीर्थ, स्थानक, धर्मशाला आदि सभी धर्म-क्षेत्रों में अनिवार्य रूप से लिखवा देना चाहिए। पाँच अणुव्रत हमारे जीवन के हर क्षेत्र में पालने योग्य हैं, किन्तु उनका धर्म-क्षेत्र में पालन अनिवार्य है। जहाँ से हमें इन अणुव्रतों की शिक्षा मिली है उस क्षेत्र में ही यदि उसका पालन नहीं किया जा सकता तो देश-दुनिया को उसके पालन की शिक्षा देना व्यर्थ हो जाएगा।

हम आध्यात्मिकता का दम्भ भर रहे हैं, लेकिन नैतिकता भी नहीं पाल पा रहे हैं। धर्म-क्षेत्र में भी हम प्रामाणिक क्यों नहीं रहना चाहते? धर्म के नाम पर हम अप्रामाणिकता को उचित क्यों मान रहे हैं?

इन बातों पर हमें ईमानदारी के साथ विचार करना है। अपने लिए भी और अपने गौरवशाली जैन समाज, एवं संस्कृति के लिए भी।

अणुव्रत

अहिंसा समाणुभूई अकत्ता परदव्वस्स खलु सच्चं।
परं मम ण इ अस्सेयं अणासत्ति अपरिग्गहो बंभं च।।

सभी जीवों में अपने ही समान अनुभूति अहिंसा है, स्वयं को परद्रव्य का अकर्त्ता मानना ही निश्चित रूप से सबसे बड़ा सत्य है, पर पदार्थ मेरा नहीं है-ऐसा मानना ही अस्तेय है और अनासक्ति ही अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य है।

पाँच पाप

ण मण्णदि सयं अप्पा जेट्ठपावं खलु सव्वपावेसु।
तेसु य सादो उत्तं पापिस्स लक्खणं जिणेहिं।।

निश्चित ही स्वयं को आत्मा न मानना सभी पापों में सबसे बड़ा पाप है और जिनेन्द्र भगवान ने पापों में स्वाद लेना ही पापी का लक्षण बताया है।

हिंसा

शास्त्रों में कहा है आत्मा में राग-द्वेष की उत्पत्ति हिंसा है। अतः जब धर्म-क्षेत्र में हम रागवर्धक कार्यक्रम करते हैं तब हिंसा का दोष लगता है। वहीं पर छोटी-छोटी बातों के लिए अपने साधर्मियों से द्वेष भाव करते हैं, उनका अपमान कर देते हैं तब हिंसा का दोष लगता है। अपनी आराधना की क्रियाओं में भी अधिक से अधिक अहिंसा की भावना रखकर आराधना करना चाहिए। हम आत्म-विशुद्धि और पुण्य सञ्चय की भावना से पूजा अभिषेक भजन-कीर्तन आदि कार्य करते हैं, किन्तु कभी-कभी उसमें सामग्री आदि में अशुद्धि के कारण हिंसा का दोष लग जाता है। कार्यक्रमों में अनुपयोगी अत्यधिक लाइट और रोशनी अनन्त जीवों की विराधक हो जाती है। ऐसे स्थानों पर भी हमें अनर्थदण्ड व्रत का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। कोई नहीं है फिर भी अनावश्यक रूप से पंखा, एसी, कूलर लाइट आदि हम ही खुले छोड़ देते हैं, इससे अनावश्यक बिजली, पैसे का व्यय और हिंसा होती है। अहिंसाणुव्रत का सर्वप्रथम पालन क्या यहाँ नहीं होना चाहिए?

---

* यह आलेख यद्यपि दिगम्बर परम्परा को ध्यान में रखकर लिखा गया है, किन्तु यह श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा एवं कुछ अंशों में स्थानकवासी परम्परा पर भी लागू होता है। -सम्पादक

राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयग्रन्थमाला – ISSN (Print): 2231-0452

उत्कर्षदीपिका

(उत्कर्षमहोत्सवमुपलक्ष्य प्रकाश्यमाना महस्विन्याः विशेषसञ्चिका)

प्रधानसम्पादकः
आचार्यः जि.एस.आर्. कृष्णमूर्तिः
कुलपतिः

सम्पादकौ
आचार्यः सतीशः के. एस्.
डा. उदयन हेगडे

राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(संसदः अधिनियमेन प्रतिष्ठापितः केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
तिरुपतिः - ५१७५०७, आन्ध्रप्रदेशः
2023

10. **भारतीयजैनज्ञानपरंपरा** 84
— प्रो.अनेकांतकुमारजैनः
11. **अभिहितान्वयबोधः** 98
— आचार्यः का.ई. देवनाथन्
12. **श्रीपाञ्चरात्रशब्दनिर्वचनानि** 150
— आचार्यः टि.वि. राघवाचार्यः
13. **ऋतुसंहारे वसन्तवर्णनम्** 163
— आचार्या सि. ललिताराणी
14. **Curriculum Development for Sanskrit students in the light of IKS and NEP-2020** 169
— Prof. R.J. Rama Sree
15. **यजुर्वेदीयहस्तसञ्चालनविधिः** 182
— डा. निरञ्जनमिश्रः
16. **विहगेन्द्रसंहितायां प्राणायामविधिः** 197
— डा. पि. टि. जि रङ्गरामानुजाचार्युलु
17. **संस्कृतवाङ्मये रसशब्दविचारः** 204
— डा. का. लीनाचन्द्रा
18. **Musical References in Pancharatra Agama** 211
— Dr. Vyzarsu Balasubrahmanyam
19. **धातुकाव्यस्य व्याकरणवैशिष्ट्यम्** 232
— डा. उदयन हेगडे
20. **ज्योतिषशास्त्रे पञ्चमहापुरुषयोगेषु व्यक्तित्वविकासः** 245
— डा.नारायणन् नम्पूतिरि न.त

महस्विनी - विद्वन्मण्डलीसमीक्षिता परामृष्टा च शोधपत्रिका (ISSN: 2231-0452) , वर्षम् : २०२३

भारतीयजैनज्ञानपरम्परा

प्रो. अनेकांतकुमारजैनः*

भारतीयसभ्यतायाः आदिकालादेव जैनधर्मदर्शनस्य अस्तित्वस्य प्रमाणानि उपलभ्यन्ते। जैन आगमानुसारेण जैनधर्मः अनादिकालतः प्रवाहमानः। जैनमान्यतानुसारेण भूतकाले भिन्न चतुर्विंशतिः तीर्थङ्कराः आसन्, वर्तमानकाले ऋषभादि चतुर्विंशतिः तीर्थङ्कराः सन्ति तथा च भविष्यत्कालेऽपि चतुर्विंशतिः तीर्थङ्कराः भविष्यन्ति। भारतीयवाङ्मयस्य प्राचीनतायाः निर्देशकाः ग्रन्थाः ऋग्वेदादयः वेदाः सन्ति। तेष्वपि व्रात्यानां वर्णनं उपलभ्यन्ते,ते वस्तुतः जैनश्रमणाः एव सन्ति। उपनिषत्सु यत्र तत्र अपि श्रमणानां चर्चा उपलभ्यते। वेदेषु जैनतीर्थंकराणां मुख्यतः ऋषभदेवस्य अजितनाथस्य अरिष्टनेमेः च वर्णनं प्राप्यते। भारतगणतन्त्रस्य पूर्वराष्ट्रपतयः विश्वप्रसिद्धदार्शनिकाश्च डॉo सर्वपल्ली राधाकृष्णमहोदयाः अपि लिखन्ति-

'There is evidence to show that so far back as the first century B.C. there were people who were worshipping Ṛṣabhadeva, the first tīrthaṅkara. There is no doubt that Jainism prevailed even before Vardhamāna or Pārśvanātha. The Yajurveda mentions the name of three Tīrthaṅkaras-Ṛṣabha, Ajitnātha and Ariṣṭanemi. The BhāgavataPurāṇa endorses the view that Ṛṣabha was the founder of Jainism. (Indian philosophy Vol I Page 287)

वैदिककालात् व्रात्यपरम्परायाः प्रमाणानि उपलभ्यन्ते, अतः ज्ञायते यत् जैनधर्मः विश्वस्य एकं प्राचीनतमं दर्शनमस्ति। मोहनजोदडो-हडप्पा-सभ्यताषु ध्यानमग्नयोगिनं तीर्थङ्कराणां मूर्तयः उपलभ्यन्ते। येन ज्ञायते यत् भारतीयपरम्परायां जैनध्यानयोगस्य प्रतिपादनं प्राचीनं विद्यते।

प्राचीनकाले जैनधर्मस्य अभिधानं व्रात्यधर्मः इत्यपि आसीत्। न केवलं जैनसाहित्यं अपितु वैदिकसाहित्ये, पुराणे बहुशः उल्लिखितमस्ति यत् अस्माकं देशस्य

* आचार्यः, जैनदर्शनविभागः, श्रीलालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

स्थापित जुलाई 1988

ISSN No. 0971-796X

प्राकृतविद्या

वर्ष 35, अंक 4

अक्टूबर-दिसम्बर 2022 ई.

भगवान ऋषभदेव पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी को
अंक लिपि की विद्या प्रदान करते हुए।

UGC Approved Research Journal

ISSN No. 0971-796 ×

प्राकृत-विद्या

पागद-विज्जा

PRAKRIT-VIDYA

Pāgada-Vijjā

प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राच्य भारतीय भाषाओं की हिन्दी तक की विकास-यात्रा दर्शानेवाली समर्पित त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

A quarterly journal devoted to researches on the development of Prakrit, Apabhramsha and Ancient Indian Languages upto Hindi Language

वीर निर्वाण संवत् 2549 अक्तूबर-दिसम्बर 2022 वर्ष 35 अंक 4

Veer Nirvan Samvat 2549 October-December 2022 Year 35 Issue 4

आचार्य कुन्दकुन्द समाधि-संवत् 2026

सम्पादक-मण्डल

श्री पुनीत जैन
(नवभारत टाइम्स)

प्रो. (डॉ.) रमेश कुमार पाण्डेय
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय)

मानद सम्पादक

प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन
(श्री ला.ब..शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

प्रबन्ध सम्पादक

श्री राजेन्द्र जैन (संघपति)

प्रकाशक
श्री अनिल कुमार जैन
महामन्त्री
श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट
18-बी, स्पेशल इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली-110067
फोन : (011) 26564510, 46062192
ई-मेल: kundkundbharti@gmail.com

Publisher
SHRI ANIL KUMAR JAIN
Secretary
Shri Kundkund Bharti Trust
18-B, Special Institutional Area
New Delhi-110067
Phone: (011) 26564510, 46062192
E-mail: kundkundbharti@gmail.com

इस प्रति का मूल्य—बीस रुपया

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
1.	मंगलाचरण : स्याद्वाद-मंगलम्		3
2.	सम्पादकीय : जैन दर्शन की विशेषता	प्रो. वीरसागर जैन	5
3.	अप्रमत्त-प्रमत्त गुणस्थान	आचार्य विद्यानन्द मुनिराज	12
4.	जैन दर्शन में वनस्पति विज्ञान	आचार्य श्रुतसागर मुनिराज	16
5.	तित्थयर-महावीर-चरियं	प्रो. अनेकांत कुमार जैन	32
6.	मुस्लिम शासकों की जैन धर्म के प्रति सहिष्णुता	डॉ. मो. मंजर अली	36
7.	नयवाद : जैनदर्शन की मौलिक देन	डॉ. अरिहन्त कुमार जैन	43
8.	समणसुत्तं में वर्णित शैक्षिक मूल्यों के विविध आयाम	डॉ. ज्योतिबाबू जैन	55
9.	जैनदर्शन का आचार-जगत् को अवदान	समणी डॉ. शशिप्रज्ञा	59
10.	श्रीयोगीन्द्रदेवविरचितं निजात्माष्टकम्	डॉ. ऋषभ कुमार जैन	65
11.	भारतीय दर्शनों में आत्मा का स्वरूप	निलिषा जैन	69
12.	प्रमुख प्राकृत-ग्रन्थों में लोकतत्त्व	नीरज कुमार	80
13.	आचार्य योगीन्दु की दृष्टि से धर्म	ज्योति शर्मा	85
14.	साहित्य-सत्कार		90
15.	समाचार-दर्शन		92

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

1. प्राकृत-विद्या सभी ग्राहकों को नियमित रूप से डाक द्वारा भेजी जा रही है। यदि आपको नहीं मिल रही हो तो हमारे कार्यालय से सम्पर्क करें।
2. यदि आप अभी तक प्राकृत-विद्या के सदस्य नहीं बने हैं तो 1500/- रुपये भेजकर आप इसके आजीवन सदस्य बन सकते हैं।
3. यदि आपको इस पत्रिका की हार्ड कॉपी की आवश्यकता नहीं है, केवल सॉफ्ट कॉपी से ही इसका अध्ययन कर सकते हैं तो भी हमें अपने ई-मेल आदि के साथ सूचित करें। यह व्यवस्था निःशुल्क है।

श्री कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-67
फोन : 011-26564510 ई-मेल: kundkundbharti@gmail.com ◆◆

तित्थयर-महावीर-चरियं

(तीर्थंकर महावीर चरित)

—प्रो. अनेकांत कुमार जैन*

पुप्फोतराभिहाणा तिसिलागब्भासाढसिदछट्ठम्मि।
अवइण्ण महावीरो तित्थयरो य जइणधम्मस्स॥1॥

स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान से च्युत होकर आषाढ़ शुक्ला षष्ठी के दिन माता त्रिशला के गर्भ में जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर अवतरित हुए।

तत्थ अट्ठदिवसाहिय णवमासपुण्णकरिदूण विदेहे।
वेसालीकुण्डउरे णाहसिद्धत्थनंदवत्ते॥2॥
भगवं सुजम्मइसाए णवणवइपंचसयवस्सपुव्वम्मि।
चेत्तसिदतेरसीए सुहे उत्तरफग्गुणिरिक्खे॥3॥

गर्भ में नौ माह आठ दिन पूर्ण करके भारत वर्ष के विदेह देश के वैशाली कुंडनगर में नाथवंशी राजा सिद्धार्थ के नन्द्यावर्त नामक महल में ईसा के पाँच सौ निन्यानवे (599) वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन शुभ उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में भगवान् महावीर का शुभ जन्म हुआ।

अट्ठोतरीयदोसय गयवस्साणि पासोप्पत्तीदो।
महावीरस्स जम्मं होही खलु पुणधम्मठविउं॥4॥

तेईसवें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ की उत्पत्ति से दो सौ अठहत्तर वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद धर्म की पुनः स्थापना के लिए तीर्थंकर महावीर का जन्म हुआ।

दट्ठूण सिंहचिण्हं वीरदाहिणपायंगुट्ठणहम्मि।
होहिइ खलु तित्थयरो णायगवरमोक्खमग्गस्स॥5॥

उस दिव्य बालक वीर के दाहिने पैर के अंगूठे के नाखून पर सिंह का चिह्न देखकर (यह भविष्यवाणी कर दी गयी थी कि) निश्चित ही (यह बालक धर्म तीर्थ

---

*आचार्य– जैनदर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110016 फ़ोन : 9711397716

Year-76, Volume-4
RNI No. 10591/62

Oct.-Dec. 2023
ISSN 0974-8768

अनेकान्त

(जैनविद्या एवं प्राकृत भाषाओं की समीक्षित त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ANEKANTA

(A Peer Reviewed Quarterly Research Journal for Jainology & Prakrit Languages)

सम्पादक/ Editor

डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

Dr. Jaikumar Jain, Muzaffarnagar (U.P.)

मो. 08512059089, 09760002389

वीर सेवा मन्दिर, नई दिल्ली-110002

Vir Sewa Mandir, New Delhi-110002

विषयानुक्रमणिका

विषय		लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1. संपादकीय	-	संपादकीय	5-15
2. सुनीतिशतकम् की शब्द संयोजना एवं भाषा तथा काव्य वैशिष्ट्य	-	डॉ. आशीष कु. जैन	16-32
3. महाकवि आचार्य ज्ञानसागरजी का हिंदी साहित्य को योगदान	-	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	33-38
4. संस्कृत भाषा एवं आधुनिक भारतीय भाषाएँ	-	डॉ. अजय कुमार मिश्र	39-46
5. तित्थोगाली प्रकीर्णक का भाषा वैविध्य	-	डॉ. अतुल कुमार प्रसाद सिंह	47-53
6. श्रुतावतार में वर्णित कतिपय ऐतिहासिक तथ्य	-	प्रो. कमलेश कुमार जैन	54-62
7. लोकभाषा प्राकृत में शिक्षा	-	डॉ. दर्शना जैन	63-75
8. तीर्थंकर ऋषभदेव और सनातन धर्म	-	डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन प्राचार्य	76-79
9. स्तोत्र साहित्य में उपसर्ग निवारण और उनकी समीक्षा	- -	डॉ. नीलम जैन	80-96

महाकवि आचार्य ज्ञानसागर जी का हिंदी साहित्य को योगदान

- डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी (ब्र. भूरामल) का जीवन ज्ञान, संयम और साधना का एक ऐसा संगम था जो बहुत दुर्लभ होता है। स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी में रहकर संस्कृत साहित्य, व्याकरण और दर्शन शास्त्र का गहन अध्ययन करके वे सिर्फ ज्ञानी पंडित ही नहीं बने, बल्कि संयम की सुरभि से अपने जीवन को सुरभित करते हुए चारित्र आराधना भी की और मोक्षमार्ग पर भी अग्रसर हुए। प्रायः देखा जाता है कि शास्त्रों का ज्ञान होने के अनंतर व्यक्ति दीक्षा लेकर साधु नहीं बनता और यदि साधु बन जाता है तो पंडित (ज्ञानी) नहीं बन पाता है। और यदि ये दोनों भी बन जाये तो रचनाकार नहीं बन पाता है, और यदि रचनाकार- साहित्यकार भी बन जाए तो संस्कृत भाषा का साहित्यकार बन पाना उत्तरोत्तर महादुर्लभ होता है, किन्तु आचार्य ज्ञानसागर जी संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ मनीषी और बेजोड़ साहित्यकार भी थे। ये सब उनके द्वारा रचित हिंदी और संस्कृत साहित्य की रचनाओं को देखने से ज्ञात होता है।

महाकवि आचार्य ज्ञानसागर : व्यक्तित्व और कृतित्वः एक झलक -

दिगम्बर जैन परंपरा के चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी के प्रथम शिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी, आचार्य श्री वीरसागर जी के प्रथम शिष्य आवार्य श्री शिवसागर जी, आचार्य श्री शिवसागर जी के प्रथम शिष्य आचार्य श्री ज्ञानसगर जी थे। इनके शिष्य आचार्य विद्यासागर जी हैं।

आचार्य श्री ज्ञानसागर जी का जन्म-वि.सं. 1948 सन् 1891 में स्थान-राणोली, जिला-सीकर (राजस्थान) में हुआ था। आपका पूर्वनाम- भूरामलजी था तथा अपर नाम- शांतिकुमार था। आपकी माता का नाम- श्रीमती धृतवरी देवी तथा पिता का नाम- श्री चतुर्भुज छाबड़ा था। दादी का नाम- श्रीमती गट्टूदेवी तथा दादा जी का नाम- सुखदेव जी था।

UGC-CARE Journal *ISSN 0972-1002*

श्रमण

ŚRAMAṆA

(Since 1949)

A Quarterly Refereed Research Journal of Jainology

Vol. LXXVI No. I January-March, 2024

Editor

Dr. Shriprakash Pandey

Associate Editors

Dr. Om Prakash Singh Dr. Rekha

Parshwanath Vidyapeeth, Varanasi

(Established: 1937)

(Recognized by B. H. U.as an External Research Centre)

Address:

I T I Road, P.O., B. H. U , Varanasi 221005

Email: pvpvaranasi@gmail.com

Website: www.pv-edu.org

Phone: 9936179817

Mob: 9936179817

Contents

१. **जैन संस्कृति का भारतीय संस्कृति को अवदान** १-९
- डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय

२. **तीर्थंकर नेमिनाथ एवं गोमेद-अम्बिका यक्ष-यक्षी** १०-१९
- अक्षय जैन 'बण्डा'

३. **वस्तु का भेदाभेदात्मक स्वभाव (लघीयस्त्रय के विशेष सन्दर्भ में)** २०-२५
- प्रो. अनेकान्त कुमार जैन

४. **तित्थोगाली प्रकीर्णक का भाषा वैविध्य** २६-३१
- डॉ. अतुल कुमार प्रसाद सिंह

५. **रात्रि भोजन विरमण का वैज्ञानिक आधार** ३२-४५
- डॉ. ब्रा. विनय भैया

6. **बिहार में जैन कला का इतिहास: राजगीर के विशेष सन्दर्भ में** ४६-५१
- राकेश यादव

७. **कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्र विरचित- वीतराग स्तोत्र एक परिचय** ५२-६७
- डॉ. योगेश कुमार जैन

8. **The Practical Application of Anekāntavāda** 68-79
- Dr. Navin Parekh

9. **Temple Architecture: Lost heritage of Jaina temples at Lakkundi, Karnataka** 80-98
- Prof. Shilpa Nagapurkar
- Dr. Parag Narkhede

10. **Cross Sectional Presence of Jainism in the Early Mathura Society: Evidences from Epigraphical Records** 99-121
- Kshitij Jain

विद्यापीठ के प्रांगण में 122-124

जैन जगत् 125-128

वस्तु का भेदाभेदात्मक स्वभाव
(लघीयस्त्रय के विशेष सन्दर्भ में)

-प्रो. अनेकान्त कुमार जैन

जो वस्तु जैसी है उसका जो स्वभाव है उसे उसी रूप से जान लेना और मान लेना ही सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन है। प्रमेयात्मक वस्तु के स्वरूप की चर्चा में अनेक दार्शनिक मतवाद प्रसिद्ध हैं। कोई उसे नित्य कहता है तो कोई अनित्य कहता है। कोई भेद स्वरूप व्याख्यायित करता है तो कोई उसे अभेद स्वरूप ही समझता और कहता है। इसका कारण यह समझ में आता है कि एकान्तवाद के कारण अन्य दार्शनिक वस्तु स्वरूप का वास्तविक स्पर्श चाहते हुए भी नहीं कर पा रहे हैं।

जैनाचार्यों का मानना है कि हमारा मुख्य उद्देश्य सत्य का साक्षात्कार करना है अन्य मतवादों का खंडन नहीं , हम वस्तु के वास्तविक स्वरूप को खोजना चाहते हैं, उसे जानना चाहते हैं। इस स्वरूप अनुसन्धान में यदि कोई समस्या आती है तो उसके समाधान में हम अन्य दार्शनिकों की भूलों या कमियों की समीक्षा करते हैं। वीतरागी आचार्य अन्य दार्शनिकों को उस व्यापक अनेकांत दृष्टि से परिचित करवाना चाहते हैं जिसके अभाव में वे वस्तु के सिर्फ एक पक्ष की व्याख्या कर पा रहे हैं,और अपने पक्ष के दुराग्रह के कारण वे सत्य के जिज्ञासु होने के कारण चाहते हुए भी वास्तविक सत्य का दर्शन और उद्घाटन नहीं कर पा रहे हैं। आचार्य अकलंक आदि अनेक जैन नैयायिक आचार्य वस्तु स्वभाव उद्घाटन की पवित्र भावना से बिना किसी राग द्वेष के एक मात्र उद्घोष करते हैं-

पक्षपातो न मे वीरे,न द्वेषः कपिलादिषु ।
युक्तिमद्वचनं यस्य तस्य कार्यपरिग्रहः।।[१]

अर्थात् मेरा वीर प्रभु से कोई पक्षपात नहीं है और कपिल आदि दार्शनिकों से कोई मतभेद नहीं है। हमें तो जिनके वचन युक्तियुक्त ठहरेंगे, उनकी बात ग्रहण करनी है।

वस्तु में जिस दृष्टि से भेद है उस दृष्टि से अभेद नहीं है और जिस दृष्टि से अभेद है उस दृष्टि से भेद नहीं है - यह जितना स्पष्ट है उतना ही स्पष्ट यह तथ्य है कि यदि समग्र दृष्टि से देखें तो वस्तु को एकानेकात्मक और भेदाभेदात्मक कहना पड़ेगा, क्योंकि इसके बिना उसका स्वरूप निर्धारण ही नहीं होता है। आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं -

Year-77, Volume-1
RNI No. 10591/62

Jan to March 2024
ISSN 0974-8768

अनेकान्त

(जैनविद्या एवं प्राकृत भाषाओं की समीक्षित त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ANEKANTA

(A Peer Reviewed Quarterly Research Journal for Jainology & Prakrit Languages)

सम्पादक/ Editor

डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

Dr. Jaikumar Jain, Muzaffarnagar (U.P.)

मो. 08512059089, 09760002389

वीर सेवा मन्दिर, नई दिल्ली-110002

Vir Sewa Mandir, New Delhi-110002

9 णमो आयरियविज्जासायराणं -प्रो अनेकांतकुमार जैन 56-60

10 भारतीय ज्ञानपरम्परा में गुरुकुलीय शिक्षा के सन्दर्भ में आचार्यश्री विद्यासागर जी का चिन्तन डॉ. सोनलकुमार जैन 61-83

11 चैतन्यचन्द्रोदय में वर्णित सिद्ध-स्वरूप का वैशिष्ट्य - डॉ.आनन्द कुमार जैन 84-90

12 अपराजेय साधक - आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज - डॉ. अनामिका जैन 91-94

13 साधनामहोदधि आचार्यश्री विद्यासागर जी के लिए भारतवर्ष में स्थापित विभिन्न संतों एवं श्रावकों के श्रद्धासुमन 95-103

14 आचार्यश्री की समाधि से उत्पन्न रिक्तता का भर पाना मुश्किल है -श्रीधनपालसिंह जैन 104-105

15 पंचाचारों का अद्भुत संगम आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज -श्रीविनोद कुमार जैन106-107

16 इस युग के भगवान्, आगम संरक्षक, समाजोद्धारक तथा जन-जन के नायक आचार्यश्री विद्यासागरजी - श्री धर्म भूषण जैन 108-109

17 विनयांजलि -डॉ. आलोककुमार जैन 110-111

ANEKANTA - ISSN 0974-8768

णमो आयरियविज्जासायराणं

- प्रो अनेकांत कुमार जैन

तिलोयपण्णत्ति में आचार्य परमेष्ठी का लक्षण लिखा है -

पंचमहव्वयतुंगा, तक्कालियसपरसमय सुदधारा ।
णाणागुणगणभरिया,आइरिया मम पसीदंतु ॥ (गाथा १/३)

पांच महाव्रतों से समुन्नत, तत्कालीन स्व समय और पर समय रूप श्रुत के ज्ञाता तथा नाना गुण समूह से परिपूर्ण आचार्य मुझ पर प्रसन्न हों।

वर्तमान में आचार्य श्री का जीवन देखते हैं तो ये लक्षण उन पर पूरे घटित होते थे । वे पांच महाव्रतों के धारी तो थे ही साथ ही वे राष्ट्र में सभी दृष्टियों से समन्वय भी बना कर चलते थे । जैन दर्शन के प्रकांड विद्वान् थे तो अन्य भारतीय दर्शनों पर भी उनकी अच्छी पकड़ थी । राजनीति के शीर्ष नेतृत्व को प्रभावित करके उन्हें मुनि परंपरा, धर्म दर्शन संस्कृति के प्रति समर्पित करना और उसका संरक्षण संवर्धन करवाना - ये सारे दायित्व भी एक आचार्य के होते हैं, जिसे वे बहुत संतुलन के साथ करते थे। उनमें अनेक गुण विद्यमान थे। आज उनका नहीं होना जैन परंपरा के सूर्य के अस्त होने जैसा है। दो गाथाओं के माध्यम से उन्हें नमोस्तु अर्पित करता हूँ -

णेणातित्थे तविओ,सयय णमो विज्जासायराणं य।
णागो वि सुणइ धम्मं, जं देसणासुदपवयणं च ॥

नैनागिरी तीर्थ पर तपस्या करने वाले उन आचार्य विद्यासागर महाराज को मेरा सतत नमस्कार है जिनकी श्रुत प्रवचन देशना सुनने सर्प जैसे तिर्यंच भी भक्तिपूर्वक वहाँ आ जाते थे ।

समणपरंवरसुज्जं सययसंजमतवपुव्वगप्परदं।
चंदगिरिसमाधित्थं णमो आयरियविज्जासायराणं ॥

श्रमण परम्परा के सूर्य, सतत संयम तप पूर्वक आत्मा में रमने